जैन जी. के.

General Knowledge

भाग -5

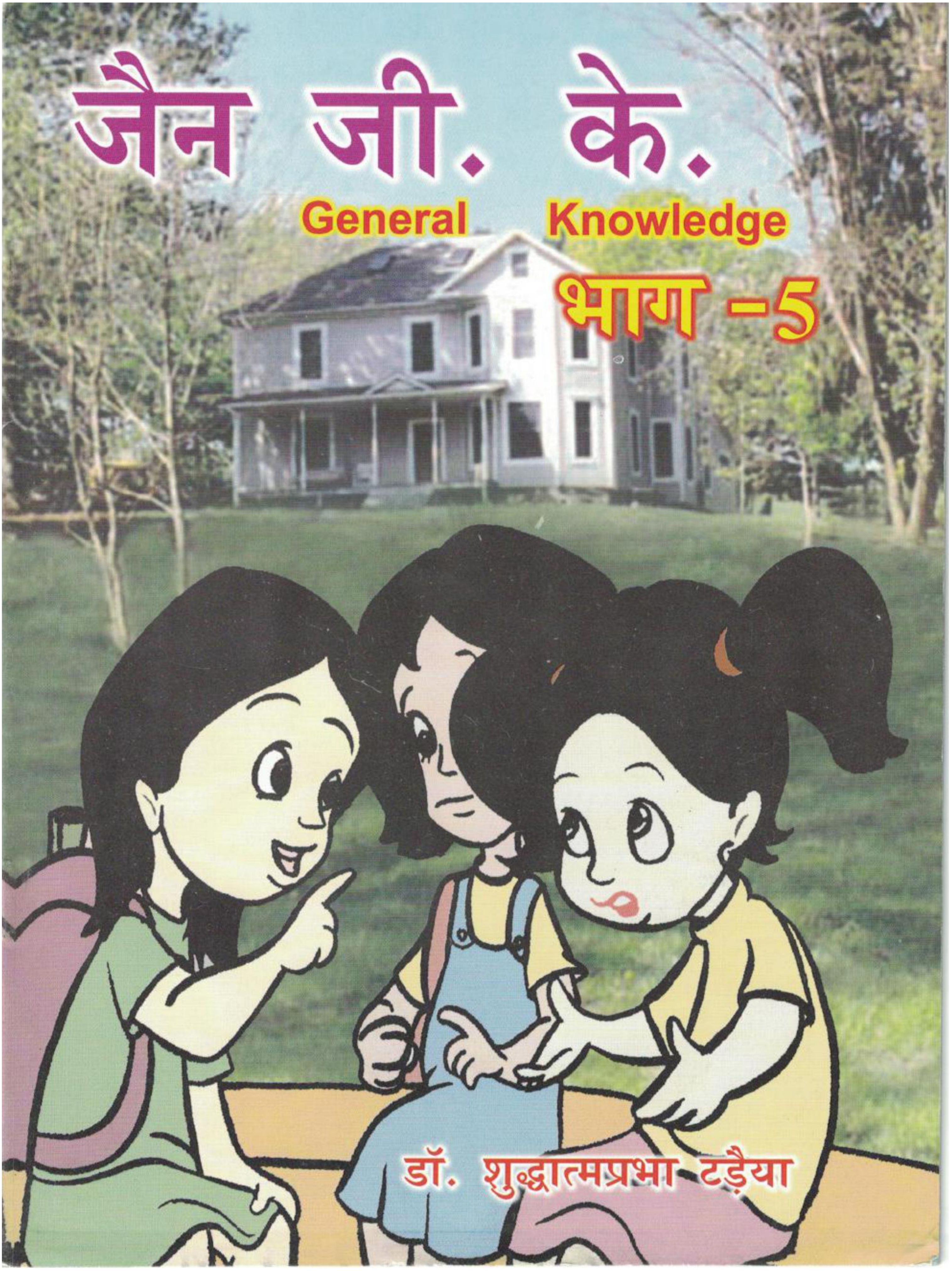

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

1 प्रार्थना

हे भगवन !

तन में कष्ट हुआ जब - जब,
डॉक्टर के पास दौड़े तब-तब ।
डॉक्टर ने जवाब दे दिया जब,
आपकी शरण में आए तब ।
जब आया आपकी शरण,
तब पहचानी सही शरण ।
'अपनी शरण ही शरण है,'
शेष सब तो अशरण हैं ।
आपने भी ली स्वयं की शरण,
आप बन गए उत्तम शरण ।
मैं भी आपका अनुसरण करुँगा,
मैं भी अपनी ही शरण लूँगा ।

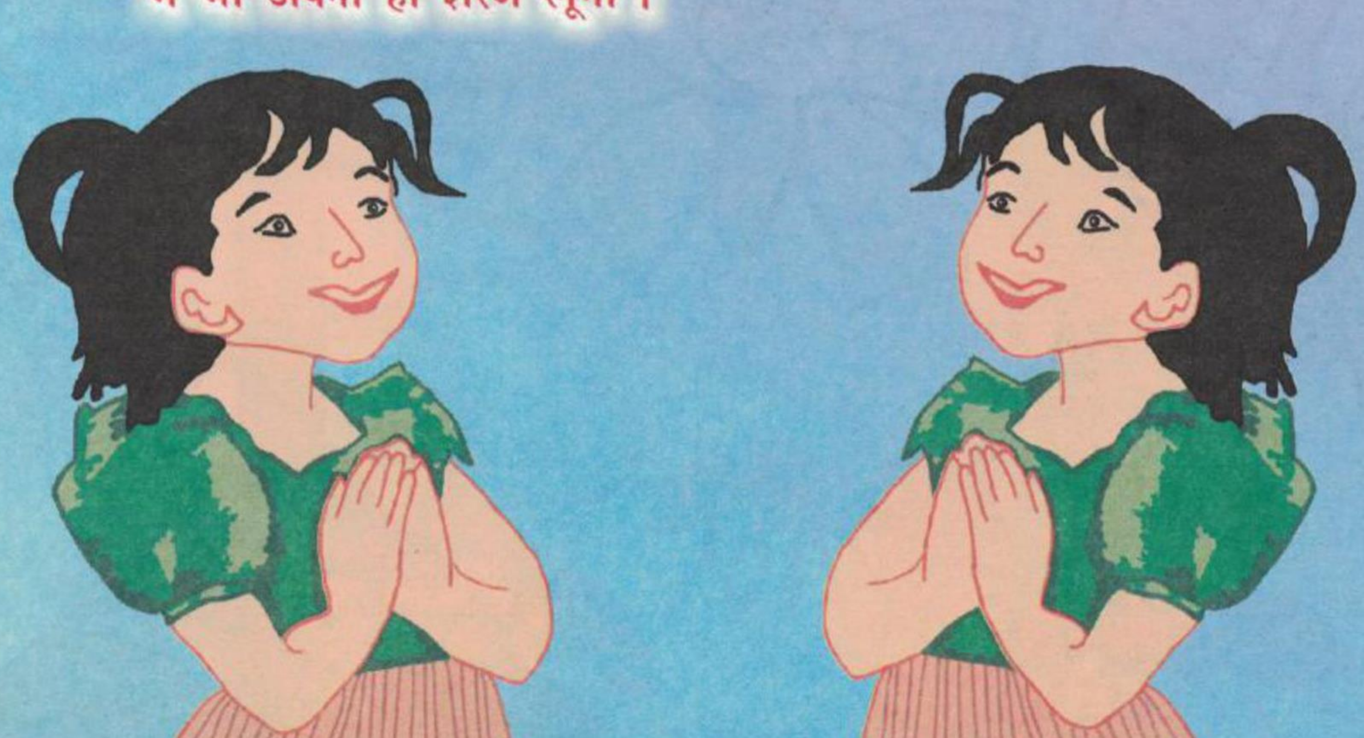

2 संज्ञी - असंज्ञी

१. पंचेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के होते हैं ?नाम बताओ।
   दो- संज्ञी और असंज्ञी।

२. संज्ञी किसेकहते हैं ?
   मन सहित जीवों को।

३. असंज्ञी किसेकहते हैं ?
   मन रहित जीवों को।

४. किस गति के जीव नियम से संज्ञी होते हैं ?
   मनुष्य, देव और नरक गति के जीव।

५. किस गति के जीव नियम से असंज्ञी होते हैं ?
   एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय के तिर्यंच गति के जीव।

६. पंचेन्द्रिय तिर्यंचगति के जीव संज्ञी होते हैं या असंज्ञी ?
   पंचेन्द्रिय तिर्यंचगति के जीव संज्ञी - असंज्ञी दोनों प्रकार के होते हैं ।

3 औदारिक शरीर

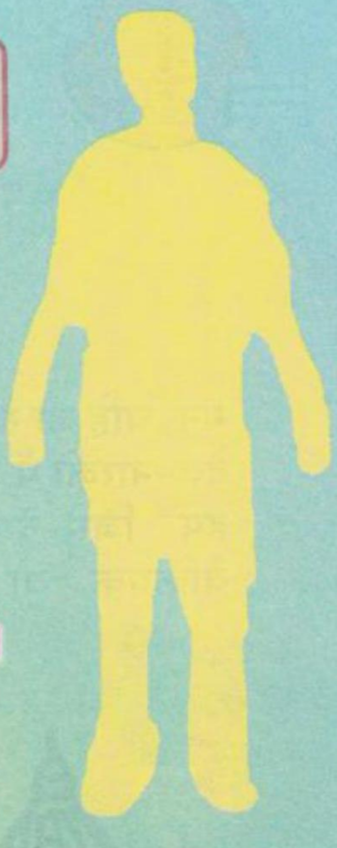

सड़ता-गलता जो स्थूल शरीर,
औदारिक कहलाता वह शरीर।
आँखों से दिखता यही शरीर,
नर-तिर्यंच में होता यही शरीर।

औदारिक शरीर किसे कहते हैं ?
जो शरीर सड़ता, गलता और झरता है; उसे औदारिक शरीर कहतेहैं।

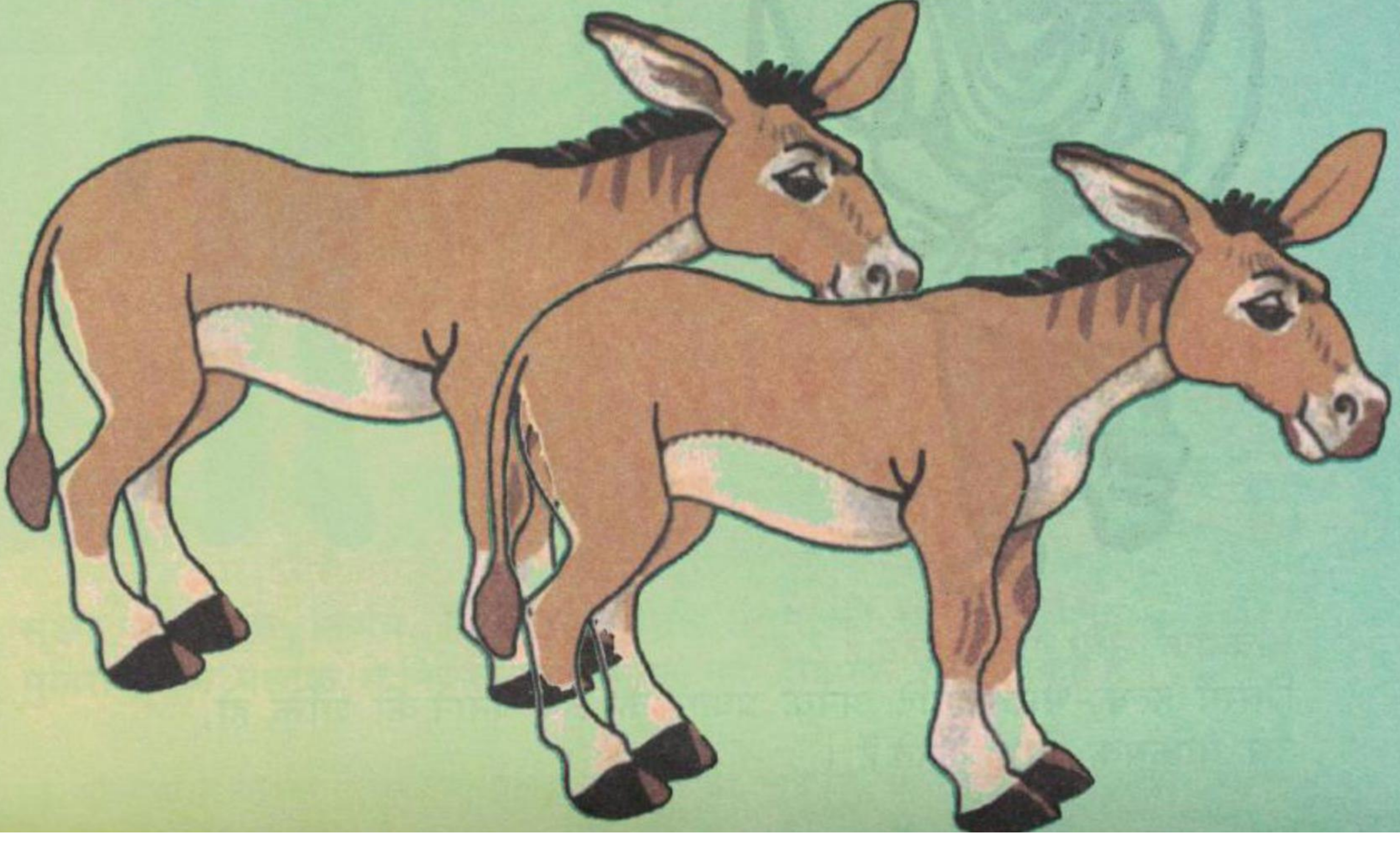

4 वैक्रियक शरीर

मन चाहे जो रूप बनाए,
देव-नारकी में पाया जाए।
हम जिसे देख न पाएं,
वैक्रियक वो कहलाए।

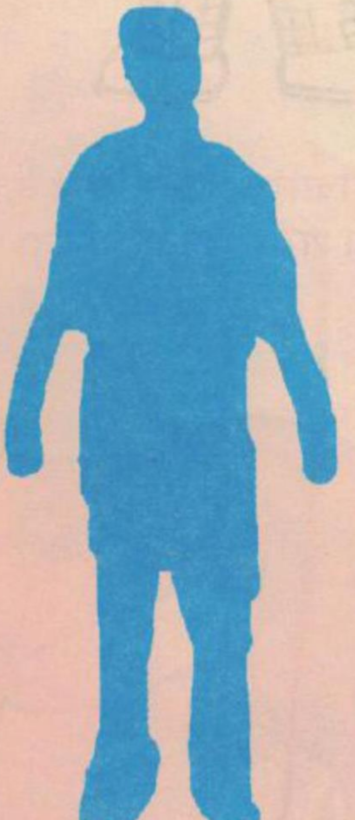

वैक्रियक शरीर किसे कहते हैं ?

जिसमें हल्के-भारी आदि अनेक प्रकार के रूप बनाने की शक्ति हो, उसे वैक्रियक शरीर कहते हैं।

5

आहारक शरीर

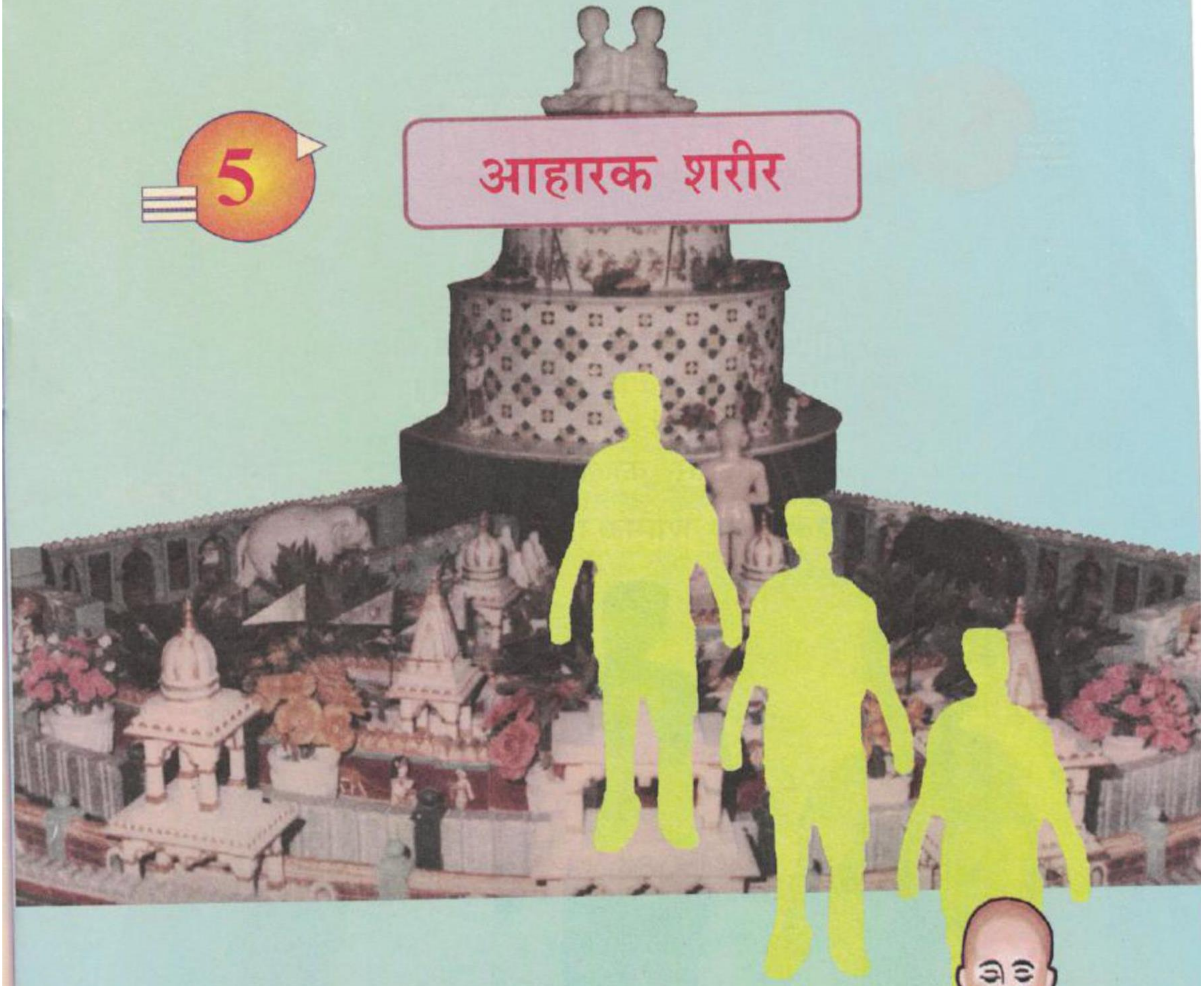

सूक्ष्म पदार्थों के ज्ञान के लिए निकलता हूँ[1] मैं,
जिनवंदना के भाव होने पर भी निकलता हूँ मैं।
ऋद्धिधारी मुनियों के छट्ठे गुणस्थान में होता हूँ मैं,
सप्त धातु रहित आहारक शरीर हूँ मैं।

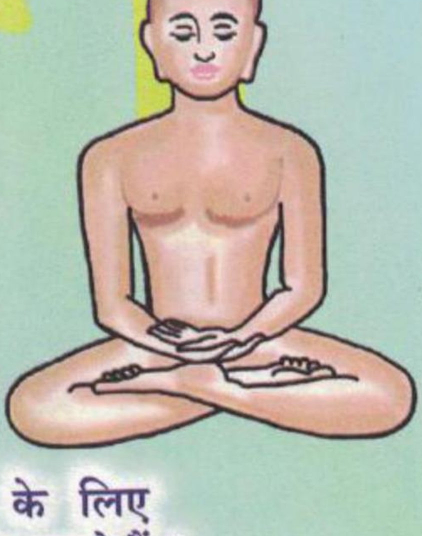

आहारक शरीर किसे कहते हैं ?

सूक्ष्म पदार्थों के निर्णय, जिनवंदना और संयम की रक्षा के लिए मुनिराजों के मस्तक से निकलनेवाले पुतले को आहारक शरीर कहते हैं।

1. मुनिराजों के मस्तक से एक हाथ प्रमाण स्वच्छ सफेद, सप्त धातु रहित पुरुषाकार पुतला निकलता है।

6 तैजस शरीर

तीन शरीरों[1] को कांति देता हूँ मैं,
चारों गतियों में पाया जाता हूँ मैं।
विग्रह गति में भी रहता हूँ मैं,
तैजस शरीर कहलाता हूँ मैं।

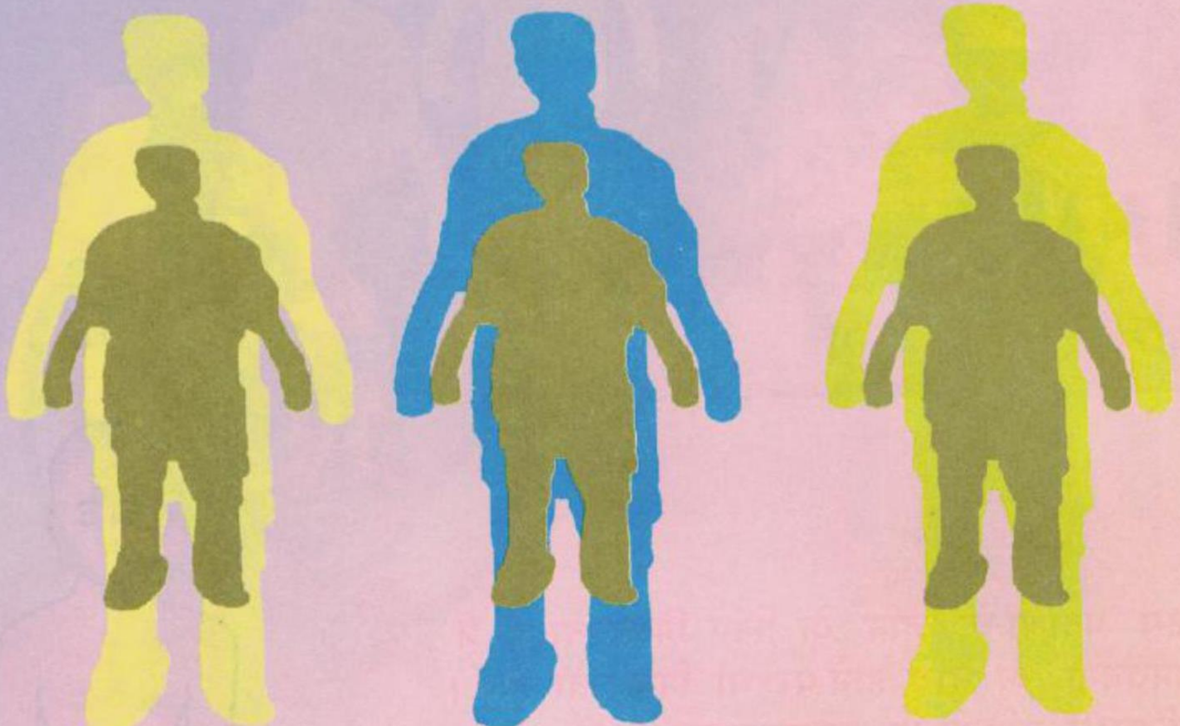

तैजस शरीर किसे कहते हैं ?

औदारिक, वैक्रियक, आहारक शरीरों को क्रांति देने वाले शरीर को तैजस शरीर कहते हैं।

1. औदारिक, वैक्रियक, आहारक

7 कार्माण शरीर

आठ कर्मों से बनता हूँ मैं,
चारों गतियों में होता हूँ मैं।
विग्रहगति में भी रहता हूँ मैं,
कार्माण शरीर कहलाता हूँ मैं।

कार्माण शरीर किसे कहते हैं ?

घानावरणादि आठ कर्मों के समूह को कार्माण शरीर कहते हैं ।

8

क्या आप जानते हैं ?

१)कम - से- कम कितने शरीर रहते हैं ?
दो- तैजस और कार्माण ।

२)प्रतिघात (बाधा रहित) कौन से शरीर होते हैं ?
दो- तैजस और कार्माण।

३)सूक्ष्म निगोदिया जीवों का शरीर कैसा होता है ?
आग से जलता नहीं, पानी से गलता नहीं, काटने से कटता नहीं और मुड़ता नहीं ।

४)आहारक शरीर अधिक से अधिक कितने समय तक रहता है ?
अंतर्मुहूर्त ।

५)हर किसी में प्रवेश कौन से शरीर कर सकते हैं ?
वैक्रियक और आहारक।

9 बताओ तो जानें

१) क्या आत्मा शरीर का कर्त्ता है ?
नहीं

२) शरीर का कर्त्ता कौन है और क्यों ?
शरीर का कर्त्ता पुद्गल है, क्योंकि शरीर पुद्गल से बना है।

३) एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता - हर्त्ता नहीं है - ऐसा मानने वाले क्या कहलाते हैं ?
अकर्त्तावादी

४) कर्त्तावादी कौन कहलाते हैं ?
जो ईश्वर को जगत का कर्त्ता - धर्त्ता - हर्त्ता मानते हैं ।

५) जैनदर्शन कर्त्तावादी है या अकर्त्तावादी ?
अकर्त्तावादी

६) 'मैं दूसरों को सुखी -दुखी कर सकता हूँ '- ऐसा माननेवालेकौन हैं?
कर्त्तावादी

10 सही उत्तर चुनिए

१) जब आत्मा देह छोड़कर भविष्य में अन्य देह धारण नहीं करता, उस अवस्था को क्या कहते हैं ?
(क) मृत्यु (ख) निर्वाण — ख

२) जगत मे देह के वियोग को क्या कहते हैं ?
(क) मृत्यु (ख) निर्वाण — क

३) तीर्थंकर महावीर के निर्वाण दिवस को हम किस रूप में मनाते हैं ?
(क) दीपावली (ख) महावीर जयंती — क

४) दीपावली के दिन केवलज्ञान किसे हुआ था ?
(क) तीर्थंकर महावीर (ख) गौतम गणधर — ख

५) तीर्थंकर और गणधर कैसा उपकार करते हैं ?
(क) मोक्षमार्ग बताने का (ख) दान देने का — क

६) सबसे बड़ा और सही परोपकार क्या है ?
(क) दान देना (ख) तत्त्वज्ञान देना — ख

11 विग्रह गति

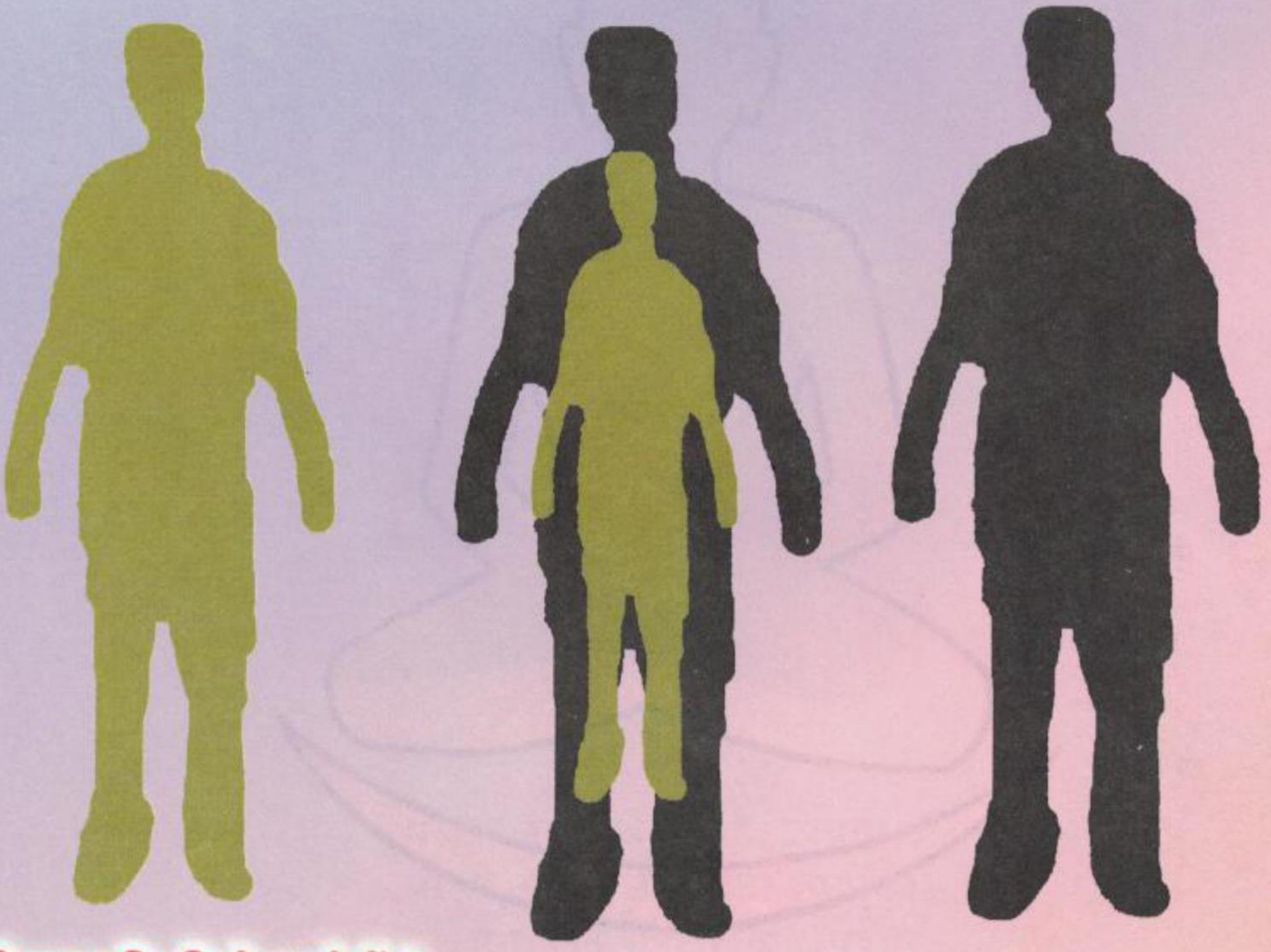

१) विग्रह गति किसे कहते हैं ?

एक शरीर छोड़ने के पश्चात् दूसरे शरीर की प्राप्ति के पूर्व की बीच की अवस्था को।

२) एक शरीर छोड़ने के बाद जीव कितने समय में नियम से नया शरीर धारण करता है ?

चौथे समय[1] में ।

३) विग्रह गति का समय कम- से- कम कितना होता है ?

एक समय।

४) विग्रह गति में जीव के साथ कौन से शरीर रहते हैं ?

दो- तैजस और कार्माण ।

५) क्या विग्रह गति में मन होता है ?

नहीं ।

1. काल के छोटे से छोटे अंश को समय कहते हैं ।

12 अविनाशी गति

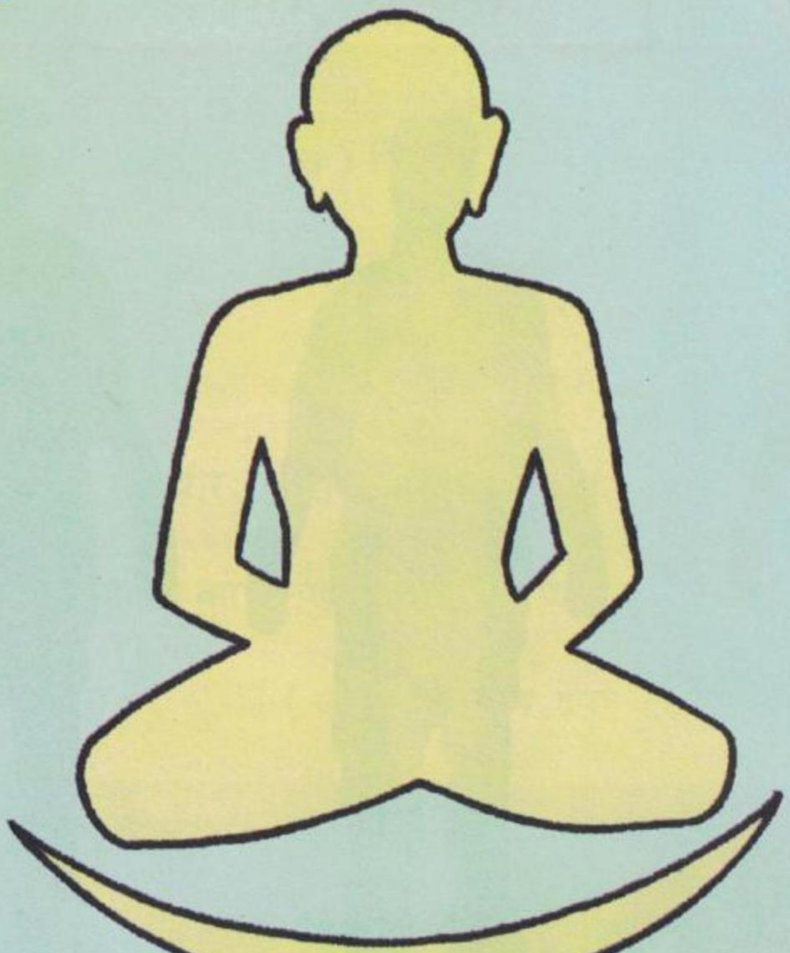

१)अविनाशी गति कौन सी है ?
पंचमगति (सिद्ध अवस्था) ।
२)सिद्ध अवस्था अविनाशी क्यों है ?
क्योंकि वह स्वभाव के अवलंबन से उत्पन्न जीव की स्वभाव रूप अवस्था है।
३)क्या सिद्ध दशा में परिवर्तन होता ही नहीं है ?
होता है, पर वह परिवर्तन सदा एक सा ही होता है ।
४)परिवर्तन होने पर भी सिद्ध दशा को अविनाशी क्यों कहा है ?
सदा एक सा स्वभाव रूप ही परिवर्तन होने के कारण ।
५)चारों गतियाँ विनाशी है या अविनाशी ?
विनाशी ।
६)चारों गतियाँ विनाशी क्यों हैं ?
क्योंकि वे परपदार्थो के अवलंबन से उत्पन्न जीव की विभावरूप अवस्था हैं ।

13

उपयोग

पर से नहीं आता है उपयोग,
पर से अपहृत नहीं होता उपयोग।
पर से मलिन नहीं होता उपयोग,
पर का आश्रय नहीं लेता उपयोग।
ज्ञान - दर्शन रूप है उपयोग,
आत्मा का स्वभाव है उपयोग।

१. क्या आत्मा के उपयोग स्वरूप का पर के द्वारा हरण हो सकता है ?
नहीं
२. क्या आत्मा के उपयोग स्वरूप को बाहर से जाने की आवश्यकता है?
नहीं
३. क्या आत्मा के उपयोग स्वरूप को पर के आलंबन की आवश्यकता है?
नहीं

14

जिनागम से

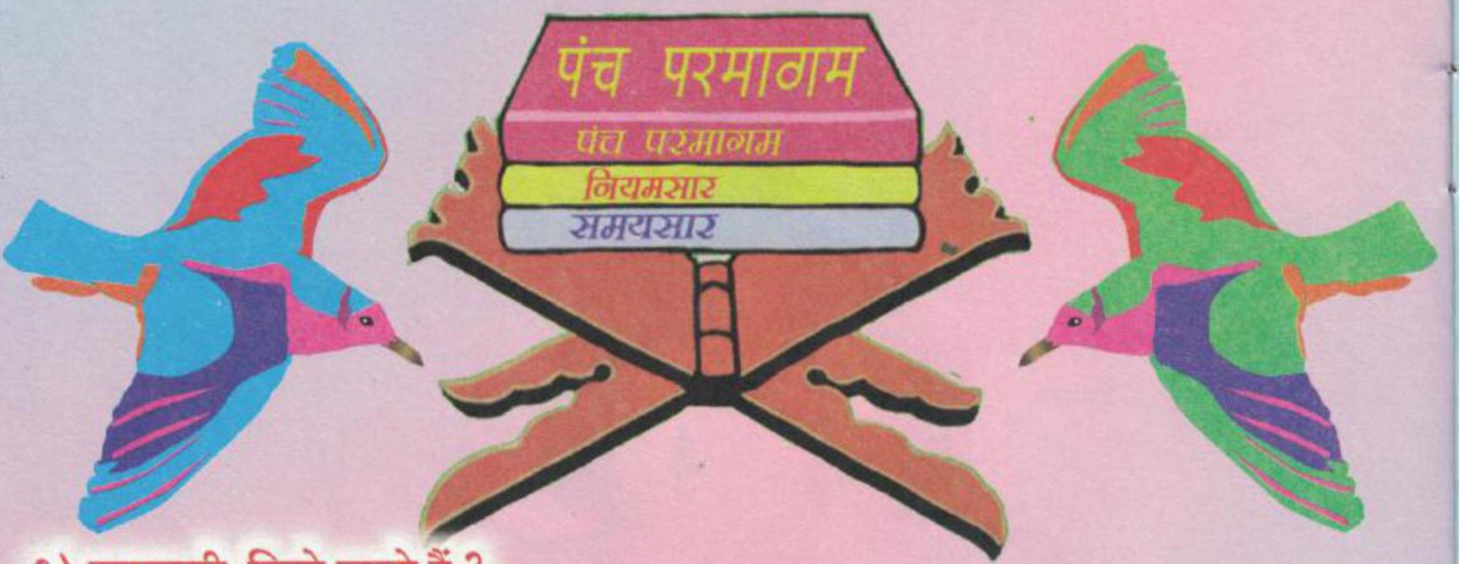

१) त्रसनाली किसे कहते हैं ?
बादर त्रस जीवों के निवास क्षेत्र को।

२) बादर किसे कहते है ?
जो किसी पदार्थ के आधार से रहते हैं, दूसरों को बाधा देते हैं और स्वयं बाधा को प्राप्त होते हैं ।

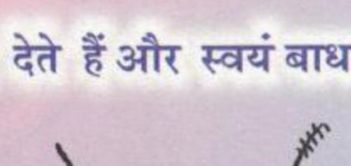

३) जीव कहाँ से निकलकर त्रस पर्याय में आता है ?
निगोद से।

४) त्रस जीव कितने प्रकार के होते हैं ?
दो- विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय।

५) विकलेन्द्रिय जीव कौन - कौन से हैं ?
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय सभी जीव।

६) सकलेन्द्रिय जीव कौन - कौन से हैं ?
पंचेन्द्रिय सभी जीव (देव, मनुष्य, नारकी और जलचर-थलचर, नभचर, तिर्यंच)

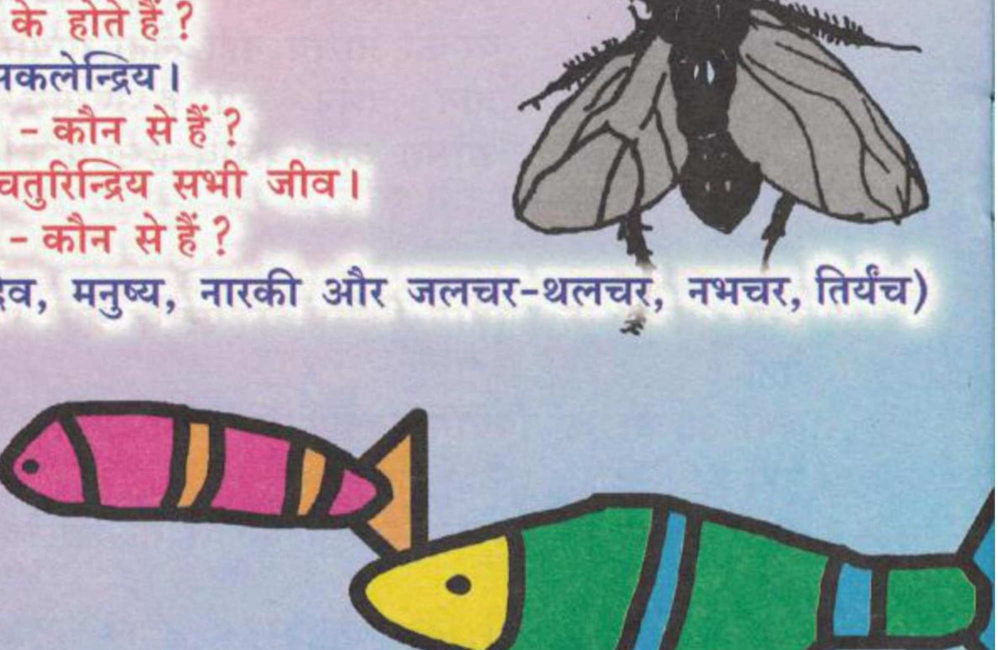

15 पाप तो करता नहीं मैं..

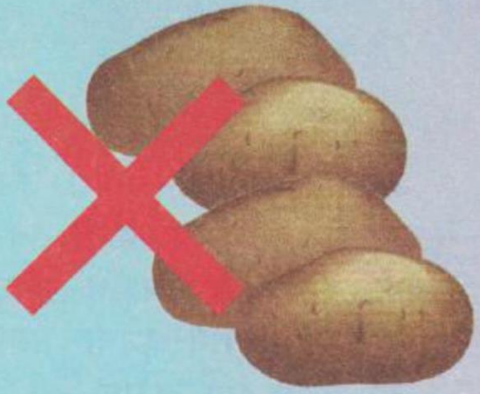

सेठजी: खाता नहीं मैं आलू - प्याज,
रात्रि भोजन का भी है त्याग।
छानकर जल काम में लेता हूँ,
व्रत - उपवास भी करता हूँ।
शुद्ध सदाचार से ही रहता हूँ।
नित देव दर्शन करने जाता हूँ,
जीर्णोद्धार मंदिर का कराता मैं,
हॉस्पिटल भी बनवाता मैं।
पाप तो बिलकुल करता नहीं मैं,
पुण्य कार्यों में सदा लगा रहता मैं।
गुरुजी: अच्छा है आचरण तुम्हारा,
क्या है व्यापार तुम्हारा?
सेठजी: फाइवस्टार का मालिक हूँ मैं,
फोन पर काम करवाता हूँ मैं।
गुरुजी: खाते नहीं तुम आलू - प्याज,
बनवाते तुम मच्छी - मांस।
भोग - सामग्री का दान करते हो तुम,
ज्ञान - ध्यान से वंचित हो तुम।
पाचों पाप होते तुम्हारे होटल में,
आज्ञा चलती तुम्हारी होटल में।
स्वामी हो होटल के तुम,
करवाते हो सारे पाप तुम।
फिर कैसे कह रहे हो तुम?
पाप तो करते नहीं हो तुम।
फाइवस्टार के मालिक हो तुम,
तो पापों के पुंज हो तुम।

16 अपने में अपनापन......

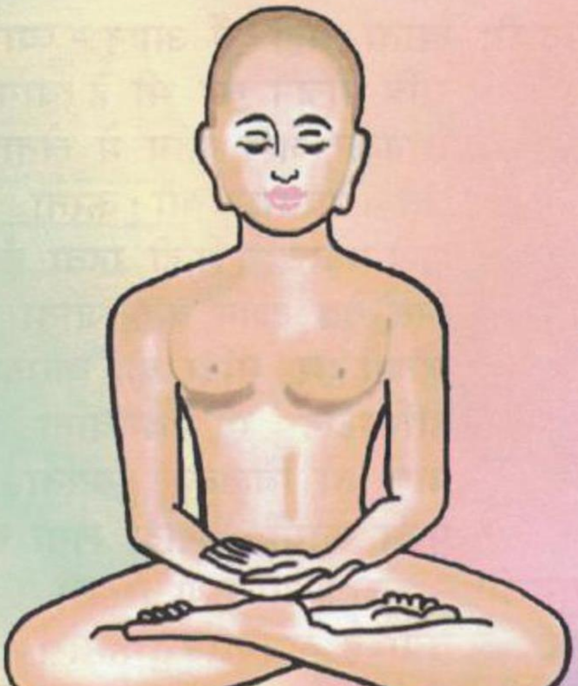

अपने में अपनापन होगा जब,
तन में परायापन होगा तब।
तन को पर मानेंगे जब,
तन से राग छूटेगा तब।
तन से भी राग छूटेगा जब,
तन भी शीघ्र छूटेगा तब।
स्व को स्व जानेंगे जब,
अपने में अपनापन होगा तब।
स्व कों स्व मानेंगे जब,
अपने में अपनापन होगा तब।
अपने में अपनापन होगा जब,
अपने में समा जाएँगे तब।
बस एक बार, बस एक बार,
अंर्तदृष्टि कर अपने को जानो तुम।
बस एक बार, बस एक बार,
शरीर रहित चेतन मानो तुम।
बस एक बार, बस एक बार,
चेतन में रम जाओ तुम।
बस एक बार, बस एक बार,
अपनेमें अपनापन कर लोतुम।

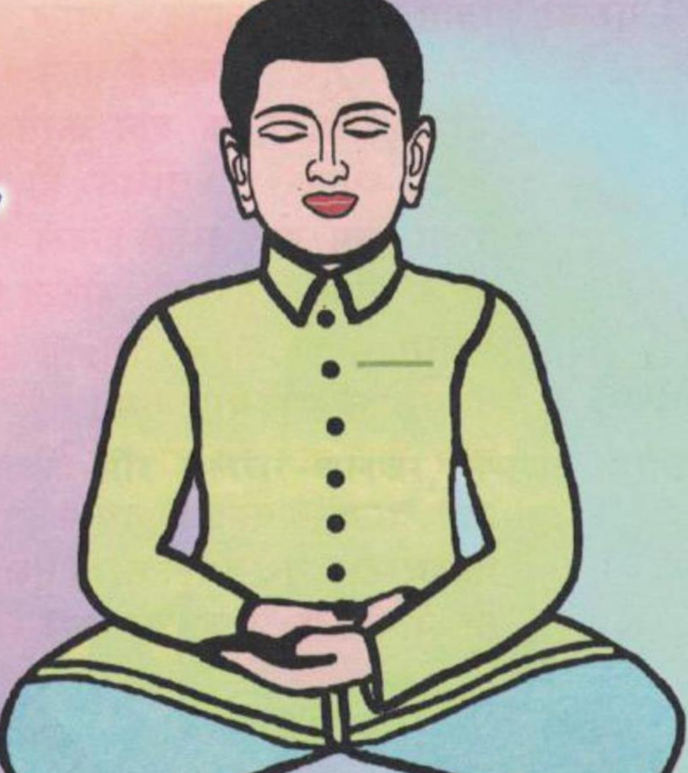

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आप का जन्म अशोकनगर(मध्यप्रदेश) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ।

सम्प्रति वह मुंबई में रहती हैं। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती हैं, तथा शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों में आपके द्वारा बालकों और युवाओं के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी कम समय में अधिक से अधिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं।

आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया। आपके द्वारा एम. ए. में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई।

आपने 'आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार: एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय

पर शोधकर राजस्थान विश्व विद्यालय, जयपुर से पीएच. डी की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों को ध्यान में रखते हुए आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथों और टीकाकारों का सर्वांगीण शोधपरक विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है जो कि विद्वत्-जन, बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट करता है।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदविज्ञान कराया गया है। अद्यावधि जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन, चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्त्वज्ञान का समावेश - इन पुस्तकों की विशिष्ट पहचान है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन - जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधायों के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेद-विज्ञान से ओतप्रोत हैं। सरलता आपकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है। कलरफुल चित्रों के माध्यम से रोचक प्रस्तुति और आकर्षक आधुनिक भाषा-शैली से सर्वप्रथम लिखी गई आपकी बाल पुस्तकें मील का पत्थर साबित हुई हैं।

'सत्ता के सुख' नामक पुस्तक में जैनदर्शन के मूल छह द्रव्यों को पात्र बनाकर, आज के राजनीतिक परिवेश में ढालकर व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत कर आपने नीरस विषय को सरस, रोचक बना दिया है।

राम वनवास, कैकेई वरदान, नेमि-राजुल वैराग्य आदि पौराणिक सुप्रसिद्ध घटनाओं के विवरण में आपका मौलिक नया चिंतन दृष्टिगोचर होता है।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी २३ पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनकी सूची अंदर प्रकाशित की गई है। वर्तमान में आप दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट की अध्यक्ष हैं।